

## Rani Chennabhairadevi

In the history of the entire Indian subcontinent, Queen Chennabhairadevi, titled Raina-Da Pimenta (Queen of Pepper), ruled for the longest period. A courageous woman from the Kannada land, she ruled for an exceptionally long time and faced historical adversities, making her the great queen of Gerusoppa, Karnataka.

From 1552 to 1606, Queen Chennabhairadevi ruled the coastal and Malnad regions, stretching from Trasi in Karnataka to the Goa border and from the Western Sea to the highlands of Avinahalli. She was the ruler of the twin states of Haduvalli and Gerusoppa. Initially, she took over the administration of Haduvalli under the Vijayanagara emperors as Mahamandaleshwari. Later, the Vijayanagara emperors entrusted her with the administration of Gerusoppa, which was previously ruled by her maternal uncle. At that time, she was only eighteen years old. She received her early education at the Ghatikasthana of Haduvalli and trained in warfare in the coastal region and in naval combat in Kerala.

Despite her kingdom being surrounded by enemies on multiple fronts, she neither feared nor hesitated. While the rulers of Keladi, Bilagi, and the Portuguese of Goa were hostile to her, the Honneya Kambali rulers, the Bhairarasas of Karkala, and the Zamorins of Kerala maintained friendly relations with her. She even made a treaty with the Sultan of Bijapur and maintained a harmonious relationship with the Vijayanagara emperors. She never initiated aggression, but never bowed to invaders. In 1558 and again in 1569–70, she defeated the Portuguese forces that invaded Honnavar. She kept the Keladi rulers in check and, by the end of 1558, even defeated them in a direct battle. Under her rule, her kingdom was prosperous, secure, and inclusive. People of various religions, castes, and professions lived together in harmony.

She was skilled in commerce. Initially, black pepper was just a wild forest product, but she introduced it as a cultivated crop to the farmers of the Malnad and coastal regions. She established a system to export it in

large quantities abroad. Despite politically opposing the Portuguese, she cleverly engaged in commercial ties with them, exporting rice, pepper, cardamom, cinnamon, jaggery, betel nuts, sandalwood, ginger, cloves, and ivory. Because of this, Dr Hannah Chapelle Wojciechowski opined that the Portuguese honoured her with the title Raina-Da Pimenta (The Pepper Queen).

In the 1560s, when the Portuguese established the Inquisition Court in Goa and intensified forced conversions, they committed atrocities against non-Christian communities like the Saraswats, Kharvis, and fishermen, rendering them destitute and exiling them. Queen Chennabhairadevi provided shelter to such oppressed groups, utilised their professional skills to enhance her kingdom's economy, and ensured they had a livelihood.

After the fall of the Vijayanagara Empire in 1564, when it attempted a revival in Penukonda, Queen Chennabhairadevi provided resources for its resurgence. The Portuguese were secretly intimidated by her. Hence, historical records reveal a letter from the Portuguese king to the governor of Goa instructing him to deal with her with "humility, prudence, and diplomatic wisdom."

More than five centuries ago, she established a wealthy and stable kingdom through foreign trade and diplomatic expertise and ruled it for over half a century.

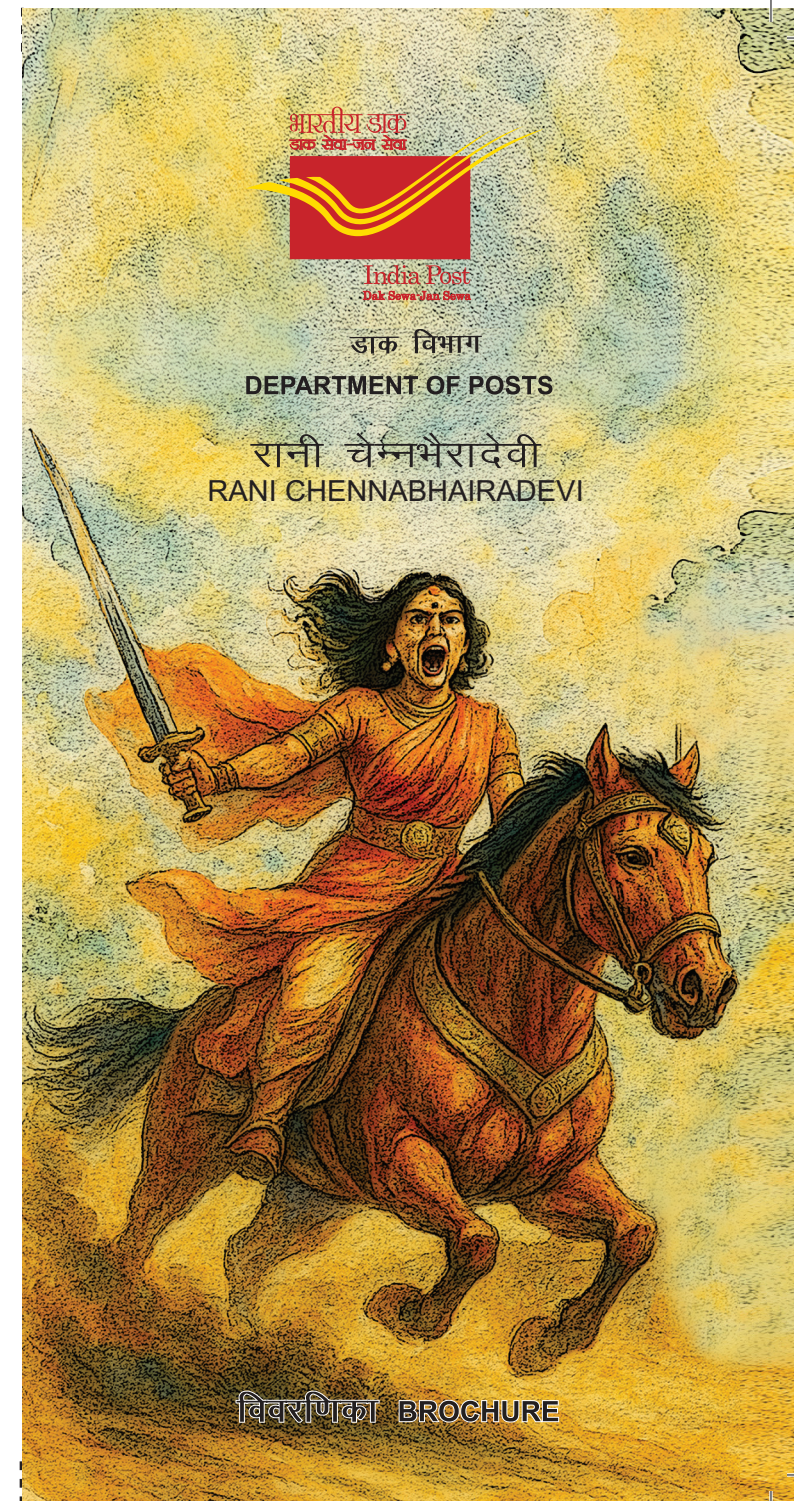
The Department of Posts is proud to release a commemorative postage stamp in honour of Queen Chennabhairadevi, the fearless queen who stood her ground against foreign invasions and led with wisdom, strength, and compassion. This stamp is a tribute to her unmatched legacy and a reminder of women's powerful role in shaping our history.

### Credits:

Stamp/FDC/Brochure/ : Sh. Anuj Kumar

Cancellation Cachet

Text : Based on information provided by the proponent.



विवरणिका BROCHURE



# रानी चेन्नभैरादेवी

रैना—दा पिमेंटा (काली मिर्च की रानी) के नाम से सुविख्यात रानी चेन्नभैरादेवी संपूर्ण भारतीय उप महाद्वीप के इतिहास में सर्वाधिक समय तक शासन करने के लिए जानी जाती हैं। कन्नड़ मूल की इस वीरांगना ने अपने असाधारण लंबे शासनकाल के दौरान अनेक प्रतिकूल परिस्थितियों का डटकर सामना किया। इसलिए इन्हें गेरुसोप्पा, कर्नाटक की महान रानी भी कहा जाता है।

1552 से 1606 तक रानी चेन्नभैरादेवी ने तटीय और मलनाड क्षेत्रों पर शासन किया, जिनका विस्तार कर्नाटक के त्रासी से गोवा की सीमा तक और पश्चिमी समुद्र से अविनाहल्ली के पर्वतीय भू-भाग तक था। रानी चेन्नभैरादेवी, जुड़वां राज्यों हडुवल्ली और गेरुसोप्पा की शासक थीं। शुरुआत में, उन्होंने विजयनगर के सम्राटों के अधीन हडुवल्ली राज्य का प्रशासन महामंडलेश्वरी के रूप में संभाला। बाद में विजयनगर के सम्राटों ने उन्हें गेरुसोप्पा राज्य का प्रशासन भी सौंप दिया। इससे पहले यहां का शासन उनके मामा चलाते थे। उस समय रानी चेन्नभैरादेवी मात्र 18 वर्ष की थीं। उन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा—दीक्षा हडुवल्ली के घटिकस्थान में प्राप्त की। उन्होंने युद्धकौशल, वहां के तटीय क्षेत्र में तथा नौसैन्य युद्ध कौशल का प्रशिक्षण केरल में प्राप्त किया।

उनके राज्य की सीमाएं कई मोर्चों पर दुश्मनों से घिरे होने के बावजूद वह न तो भयभीत हुईं और न ही घबराईं। एक ओर जहां केलाडी, बिलगी और गोवा के पुर्तगाली शासक उनके प्रति शत्रुतापूर्ण रवैया रखते थे, वहीं होन्नेया कंबली शासक, कारकला के भैरसासा तथा केरल के जामोरिन के साथ उनके संबंध मैत्रीपूर्ण थे। रानी चेन्नभैरादेवी ने बीजापुर के सुल्तान से संधि की और विजयनगर के सम्राटों के साथ सौहार्दपूर्ण संबंध बनाए रखे। उन्होंने कभी किसी पर पहले आक्रमण नहीं किया, किंतु आक्रमणकारियों के सामने कभी झुकी भी नहीं। रानी चेन्नभैरादेवी ने 1558 में और पुनः 1569—70 में होन्नावर पर आक्रमण करने वाली पुर्तगाली सेनाओं को पराजित किया। वे सदैव केलाडी शासकों से सचेत रहती थीं और 1558 के अंत में उन्होंने सीधे युद्ध में उनके दांत खट्टे किए। उनके शासनकाल में उनका राज्य समृद्ध, सुरक्षित और समावेशी स्वरूप का था तथा विभिन्न धर्मों, जातियों और व्यवसायों के लोग सद्भाव से रहते थे।

उनके राज्य में व्यापार और व्यवसायिक गतिविधियां खूब फली-फूली। आरंभ में काली मिर्च केवल एक जंगली वन उत्पाद था, लेकिन उन्होंने मलनाड और तटीय क्षेत्रों के किसानों को इसकी खेती करने के लिए प्रोत्साहित किया। रानी चेन्नभैरादेवी ने बड़ी मात्रा में काली मिर्च के निर्यात की व्यवस्था स्थापित की। हालांकि वे राजनीतिक दृष्टिकोण से पुर्तगालियों

के विरुद्ध थी, फिर भी उन्होंने उनके साथ व्यापारिक संबंध स्थापित कर चावल, काली मिर्च, इलायची, दालचीनी, गुड़, सुपारी, चंदन, अदरक, लौंग और हाथी दांत का निर्यात प्रारंभ किया। डॉ. हैना चौपल वोज्शिआकोव्स्की की राय थी कि इसी वजह से पुर्तगालियों ने उन्हें रैना—दा पिमेंटा (काली मिर्च की रानी) की उपाधि से सम्मानित किया।

1560 के दशक में पुर्तगालियों ने गोवा में इनक्विजिशन कोर्ट की स्थापना की और वे जबरन धर्मांतरण करने लगे। उन्होंने सारस्वत, खारवी और मछुआरों जैसे गैर—ईसाई समुदायों पर बहुत अत्याचार किए तथा उन्हें बेसहारा कर निर्वासित कर दिया। उस समय रानी चेन्नभैरादेवी ने ऐसे उत्पीड़ित समूहों को आश्रय प्रदान कर उनके पेशेवर कौशल का प्रयोग अपने राज्य की अर्थव्यवस्था को बढ़ाने के लिए किया। रानी चेन्नभैरादेवी ने यह भी सुनिश्चित किया कि ऐसे लोगों को आजीविका का साधन भी उपलब्ध हो।

1564 में विजयनगर साम्राज्य के पतन के बाद, जब पेनुकोंडा में पुनः उसके उत्थान का प्रयास हुआ, तो रानी चेन्नभैरादेवी ने पुनरुत्थान के इस कार्य के लिए संसाधन उपलब्ध कराए। पुर्तगाली वास्तव में अंदर से उनसे भयभीत रहते थे। यह तथ्य एक पत्र के रूप में ऐतिहासिक रिकॉर्ड में भी उपलब्ध है। इस पत्र में पुर्तगाली राजा ने गोवा के गवर्नर को रानी से “विनम्रता, विवेक और कूटनीतिक बुद्धिमता” से पेश आने को कहा था।

रानी चेन्नभैरादेवी ने लगभग 500 वर्ष पूर्व विदेश व्यापार और कूटनीतिक विशेषज्ञता के माध्यम से एक समृद्ध और स्थिर राज्य की स्थापना की और 50 वर्ष से भी अधिक समय तक शासन किया।

डाक विभाग, रानी चेन्नभैरादेवी के सम्मान में डाक—टिकट जारी करते हुए गर्व का अनुभव करता है। वे एक ऐसी निर्भीक रानी थीं, जो विदेशी आक्रमणकारियों के सामने चट्टान की तरह डटी रहीं। उन्होंने बहादुरी, बुद्धिमता और करुणा जैसे गुणों के बल पर लंबी अवधि तक शासन किया। यह डाक—टिकट, रानी चेन्नभैरादेवी की अतुलनीय विरासत और इतिहास को आकार देने में उन जैसी महिलाओं की महती भूमिका के प्रति श्रद्धांजलि स्वरूप है।

## आभार :

डाक—टिकट / प्रथम दिवस आवरण / : श्री अनुज कुमार  
विवरणिका / विरूपण केश :  
पाठ : प्रस्तावक से प्राप्त सामग्री के आधार पर

# तकनीकी आंकड़े

## TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	: 500 पैसे
Denomination	: 500p
मुद्रितडाक—टिकटें	: 303650
Stamps Printed	: 303650
मुद्रण प्रक्रिया	: वेट ऑफसेट
Printing Process	: Wet Offset
मुद्रक	: प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	: Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at [http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY\\_3D.html](http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html)

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the Stamp, First Day Cover and Information Brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 15.00